SJIF 2014 = 3.189
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

मिड–डे–मील एक समीक्षात्मक दृश्टि

शोध निर्देक्षक

अजय कुमार दूबे Ph.D,(रीडर) टी0डी0 कालेज, जौनपुर।

शोध छात्र

रामानन्द पाण्डेय उ0प्र0 राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

इलाहाबाद।

सारांष

मिड–डे– मील विष्व का सर्वाधिक बड़ा कार्यक्रम है। सरकारी, स्थानीय निकायों एवं सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में प्राथमिक स्तर के 6–14 वर्श के बच्चों का स्कूलों में दाखिला बढ़ाने, उन्हें विद्यालयों में बनाये रखने तथा उनके स्वास्थ्य एवं पोशण को सुधारना उसका मुख्य उद्देष्य है। स्कूलों में दाखिले बढ़े, स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति घटी, प्राथमिक षिक्षा की परिधि बढ़ी। आचरण एवं मूल्यों के विकास के केन्द्र के रूप में चिन्हित ये विद्यालय मिड–डे–मील आकड़ों की बाजीगरी के केन्द्र बनने लगे है। षिक्षकों की कमी से जूझते विद्यालयों में मिड–डे–मील के प्रबंधन में उलझे षिक्षक अपने षिक्षा के गुरूतर दायित्व से भटकने लगे है। अतः मिड–डे–मील में नये विमर्ष की आवष्यकता है।

मानव एवं राश्ट्र की प्रगति का एक आधार षिक्षा है। षिक्षा रूपी भवन की नींव, प्राथमिक षिक्षा, अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आने वाली पीढ़ियों का निर्माण करती है। राश्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने इसकी महत्ता पर प्रकाष डालते हुए कहा था कि ''आज के बच्चे ही कल के राश्ट्र के पिता है।''भारत सरकार षिक्षा को सर्वजन सुलभता के लिए सक्रिय है और उसका मन्तव्य समय–समय पर चलाये गये तमाम कार्यक्रमों एवं योजनाओं में स्पश्टतः परिलक्षित होता है। सर्वषिक्षा अीियान, मिड–डे–मील कार्यक्रम, षिक्षा गारण्टी योजना, आपरेषन ब्लैक बोर्ड इत्यादि कुछ ऐसी परियोजनाएं है जो षिक्षा जैसे पवित्र कार्यक्रम को पल्लवित एवं पुश्पित करने हेतु चलायी गयी एवं जा रही है। बुनियादी षिक्षा की दिषा में किये गये प्रयत्नों में षायद अब तक के सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रभावषाली तथा साहसी कदम है, ''मध्याह्न भोजन कार्यक्रय''। यह संसार का सर्वाधिक बढ़ा कार्यक्रम है। सरकारी, स्थानीय निकायों एवं सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में प्राथमिक स्तर के 6–14 वर्श के बच्चों का स्कूलों में दाखिला बढ़ाने, उन्हें पढ़ाई अनवरत जारी रखने हेतु प्रात्साहन और साथ ही उनके

स्वास्थ्य और पोशण को सुधारना इसका मुख्य लक्षय है। मिड–डे–मील कार्यक्रम का षुभारम्भ 1995 के स्वतंत्रता दिवस को किया गया। वर्श 2001 तक कुछ एक राज्यों को छोड़कर सिर्फ 100 ग्राम अनाज प्रति छात्र प्रतिदिन के दर से दिया जाता रहा। नवम्बर 2001 में सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक निर्णय में सभी राज्यों में पका–पकाया मध्याह्न भोजन देने की बात कही। वर्तमान में सभी राज्यों तथा केन्द्र षासित प्रदेषों में पका–पकाया मध्याह्न भोजन कार्यक्रम चल रहा है। इस कार्यक्रम के लिए अनाज की व्यवस्था राज्य सरकार को एफ0सी0आई0 मुफ्त करता है। गुणवत्ता निर्धारण के लिए सुप्रीम कोर्ट के आदेष पर एक विषेशज्ञ दल का गठन किया गया है। विषेशज्ञ दल न्यूनतम गुणवत्ता के मानक को परिभाशित करता है, गुणवत्ता का नवीनीकरण करता है। कार्यक्रम संचालन एवं प्रबंघन तथा कार्यक्रम की प्रभावषीलता का पता लगाता है। इस योजना के षानदार परिणाम आ रहे हैं। न केवल दाखिला लेने वाले बच्चों की संख्या बढ़ोत्तरी हुई है बल्कि ड्राप आउट रेट काफी कम हुई है। वर्श 2001 में स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या जहॉ लगभग 3.5 करोड़ थी वही वर्श 2005 में स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या घटकर एक करोड़ रह गयी है।

यद्यपि मिड–डे–मील वैष्विक स्तर पर सराहनीय कार्यक्रम है तथापि यह परिवेष गति विसंगतियों से घिरा हुआ है। मसलन क्या पढ़ाई सांस्कृतिक, गतिविधियों, खेलकूद, प्रतियोगिताओं के लिए चर्चित विद्यालय आज भोजनालय बनते जा रहे हैं। क्या वास्तविक प्रगति एवं विस्तार आकड़ों मात्र का विस्तार है। क्या वास्तव में गरीबों एवं वंचितो के बच्चों के सक्षम व्यक्तियों के बच्चों के समतुल्य खड़े होने लायक बन रहे हैं? या उनके मध्य खाई और गहरी हो रही है? क्या वास्तव में हम इन विद्यालयों की परिधि में आये बच्चों के स्वास्थ्य और पोशण के स्तर को ऊँचा उठाने में सफल हो पा रहे हैं। वास्तव में डेढ़ दषक बीतने के पष्चात इस योजना/कार्यक्रम पर विद्यानों एवं षिक्षाविदों द्वारा नये सिरे से विमर्ष एवं विष्लेशण की आवष्यकता है जिससे इस पवित्र योजना को अधिक प्रभावी बनाया जा सके तथा हमें अपने पावन लक्ष्य को पा सके। प्राथमिक स्तर की षिक्षा की गुणवत्ता पर आगू का षैक्षणिक कौषल, गति एवं समक्ष निर्भर करती है। समय–समय पर गैर सरकारी संस्थाओं की सर्वे रिपोर्ट प्रकाषित होती रही है। उनके मुताबिक आज प्राथमिक स्तर पर कक्षा 5, 6 में पढ़ने वाले बच्चों में 70 प्रतिषत बच्चे ऐसे है जिनकी भाशाई और गणितीय कौषल कक्षा दों के स्तर की है। कक्षा 6, में पढ़ने वाले बच्चे कक्षा 2 के स्तर, का जोड़ घटाना नही कर सकते। (योजना मार्च 2010) वास्तव में अधिकांष विद्यालयों में षिक्षक मानक के अनुरूप नही है। बहुत से विद्यालय एकल विद्यालय या दो षिक्षकों के सहारे चल रहे है। विद्यालयों में रसोइयों की नियुक्ति तो होती है किन्तु भोजन पकाने तथा खिलाने की निर्णायक एवं भार साधक जवाबदेही प्रधानाध्यापक/अध्यापक की ही होती है। ऐसी स्थिति में षिक्षा की गुणवत्ता मिड–डे–मील की सफलता की तुलना में द्वितीयक बनने लगती है। पुनः खाद्यान की घटिया आपूर्ति, भरपेट भोजन न मिलना, गुणवत्ता एवं मानक के अनुरूप खाना न दिया जाना आदि कारणों से गरीब एवं वंचित बच्चों

जो अधिकांषतः ऐसे विद्यालयों में आते है। स्वास्थ्य के साथ ही गुणात्मक षिक्षा से भी वंचित होने लगते है, जिससे भविश्य की प्रतियोगिताओं में सम्पन्न एवं सक्षम बच्चों की तुलना में और गरीब एवं वंचित होने के बुनियाद पर उठते नजर आ रहे है। आये दिन खबर पढ़ने, सुनने, देखने को मिलती है कि आज इस स्कूल में बच्चे मिड–डे–मील खाकर बीमार पड़े तो कल उस स्कूल में। मिड–डे–मील खाकर बच्चे बीमार होने की अधिकता के मूल में खाना पकाने की अच्छी व्यवस्था न होना, घटिया गुणवत्ता वाली खाद्य सामग्री मुहैया कराना, तथा भ्रश्टाचार आदि है। मिड–डे–मील तथा पूरक पोशण कार्यक्रम में भ्रश्टाचार में लिपटा पाये जाने के कारण उड़ीसा की महिला एवं बाल विकास मंत्री को फरवरी 2011 में अपना इस्तीफा देना पड़ा। अब यह एक प्रवृत्ति बनती जा रही है। ऐसे प्रकरण में यह आवष्यक है कि इस अनोखे कार्यक्रम (मिड–डे–मील) पर समीक्षात्मक दृश्टि डाली जाय जिससे षिक्षा का गुणवत्तापूर्ण विस्तार एवं बच्चों के स्वास्थ्य का उन्नयन अर्थात उनका सर्वांगीण विकास सम्भव हो। इस हेतु स्थानीय स्तर पर तैयार किये गये सूखे खाद्य पदार्थ (लड्डू, ब्रेड, बिस्किट), मौसमी फल, दूध आदि दिये जा सकते हैं। स्थानीय उपलब्धता एवं उत्पादन रोजगार सृजन को भी बढ़ावा देगा। इस कार्यक्रम की मानीटरिंग गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से की जानी चाहिए। स्थानीय स्वषासन इकाई को जिसमें बच्चों के अभिभावक भी हो, पर्यवेक्षी भूमिका सौपनी चाहिए। इससे षिक्षक, गुणवत्तापूर्ण षिक्षा को ही अपने मूल ध्येय के रूप में धारण करेगा, योजना के अन्तर्गत भ्रश्टाचार पर अंकुष लगेगा तथा छात्रों का षारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास सम्भव होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्निहोत्री, प्रोफेसर रवीन्द्र (1977) – भारतीय षिक्षा की वर्तमान समस्याएं रिसर्च पब्लिकेषन इन सोषल सांइसेज
2. कपिल, एच0के0 (1992) – सांख्यिकी के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
3. कौल, लोकेष (1984) – मेथेडोलॉजी ऑफ एजुकेषनल रिसर्च, प्राइवेट लिमिटेड
4. गैरेट, एच0ई0 (1994) – षिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिसर्स लुधियाना
5. पाण्डेय रामषक्ल (1988) – षिक्षा समीक्षा, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद
6. वुच0एम0बी0 (1977–93) – सेकेण्ड, थर्ड, फोर्थ, फिफ्थ, सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेषन
7. वर्मा, प्रीति श्रीवास्तव, डी0एन0 (1996) – आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
8. प्रसाद, एस0 (1982) – फैक्टर्स दैट अफेक्टिंग द स्टैविलिटी ऑफ सेल्फ
9. षुक्ला एस0के0 एवं राय वी0के0 (1984) – षिक्षा में मापन मूल्यांकन व सांख्यिकी